THE ESSENCE OF THE GOSPEL.

मङ्गल समाचारका तत्व ज्ञान ॥

प्रभु विशु खीष्ट जगत् चाता ई खरके तेजका प्रकाश चीर उसके भादका यथालीय जा अटार इसी चीतीस बरस इए जगतके प्रायश्चित्य कारण अवतार धारके आत्य बिल्हान होके मरा श्रीर जीउटा उस ईश्वरावतारने सर्गको गमन करणेसे पहिले अपने अगतगणोंको आजा करी कि वे सारे जगतमें और सर्व्य लोगों के और भाषी यों के बीच उन्ह के मुक्तार्ध अपने विषयके मङ्गल समाचार को प्रचारे से। उसके दास प्रचारते प्रचारते इस देशतक आई हैं ती चाहिये कि सब लोग छोटे और बड़े उस म कुल समाचारके विषयको ध्यान लगाने मुने खोंकि इस कर्म हीन समयमें कभींसे मुक्त नही पर ईश्वरावतारकी भन्नी श्रीर उपासनासे है।

जब प्रभुने अपने दास पाउलको आन्यदेशीयोंके पास भेजाशा मङ्गल समाचार प्रचारणे तब प्रचारनेकायह अभि प्राय बताया था कि मङ्गल समाचारके तत्वज्ञानसे आन्य देशीयोंकी आंखे खुली जावें और वे अधेरेसे उजियालेकी श्रीर ग्रयतानसे ईश्वरको त्रोड फिराए जावें जिस्से उन्हकी पापेंका मोचन होवे श्रीर यिश् नामकी भक्तीसे जो जो प विच जए हैं उन्हों वे अधिकार पावें ॥ इस लिये पाउल द्यानन्द रूपसे कहता है कि में खीष्टके मङ्गल समाचारसे

[1500 Copies-Serampore, July, 1834.]

MAR 14 1913

MEDITOPION SENIOR

लिज नही ज कोंकि सा हरेक मिसमानोंका मुक्ततक पज्जचानेकोई अरकी शक्त है और इस मङ्गल समाचा र में ई यरका धर्म सक्ताकी राहसे प्रकाश है जैसा लिखा है यथार्थ लोग भक्तीसे जीयेगे चीर दूस मङ्गल समाचारसे ई अरका को पभी मनुष्योंकी सारी इधक्षीयोंपर प्रगट किया गया है ॥ की कि जगतके सब लोग पापके अधीन हैं जैसा विखा है साधु कोई नही एक्सी नही सममाने वाला कोई नहीं ईश्वरका दुंढनेवाला बोई नहीं सब गुम राह इए हैं वे सबके सब निक्सें इए हैं नेक काम करने वाला कोई नही एकभी नही उन्हका गला खुलो कबर है उन्हकी जीभसे उन्हांने इस विया ह सापांका जहर उन्ह के बोठोंतले हैं कोसना बीर कड़वी बातांसे उन्हका मुंह भरा है जन्दने पैर खूनरेजोको दौड़ते हैं नाम करन ख्रीर विगाडना उन्हकेचलनमें हैं ख्रीर कुम्सलकी राष्ट् उन्होंने नही जाना ई यरका जरा डर उन्हकी आंखोंकी सामने नहीं है। इसीसे सबका मुद्द वह है श्रीर सारा जगत ईश्वरके श्रागे श्रपराधी है श्रीर बर्म्स शास्त्रसे कोई प्राणी ई अरके आगे निर्दीषी नहीं हो सकता है के कि कर्स शास्त्रसे पापका ज्ञान होता है पर कर्भ शास्त्र विना ई अरका जी धर्म प्रकाश इत्या है जिसकी धर्भ यंथ श्रीर त्राचार्थने राची दीई है से धर्म विश्व जीष्टपर भित्त करनेसे प्राप्त होता है क्योंकि स्भोंके पापी होनेसे ईश्वर ने यिशुके लक्तको प्रायिख्य निमित्त उत्तरायाहै कि ईश्वर की चुमासे उस जड़के गुणसे पिछले पापांका मोचन होवे श्रीर ई श्रर यथार्थ होकंभी यिशुपर भित्तकरनेवालोंको

निर्दीषी रूपसे गिणे॥ आवर हासभी भन्नीसे निर्देशी **डहरा कर्नींसे नहीं क्येंकि धर्मयंय कहता है आवर हाम** ने ई खरकी भन्नी करी और से। उसके लिये धर्म करके गिणा गया अब देखिये कि अगर कोई निइनत करता है उसकी मजूरीको दान नहीं बहता है पर वह दैन गिणा जाता है लेकिन जो वर्भ नहीं करता है पर अधर्मी के निर्देशो करनेवालेंकी भित्त करताहै उसकी भन्नी धर्म वरके गिणी जाती है। जैसा दाउदनेभी उस मनुष्यकी धन्य कहते वर्नन किया है िसका ईश्वर कर्मी में बिना धर्मी गिणता है कि धन्य वे जिसके पाप माचन इए हैं चीर खोंटाई ढप गई धत्य वह मनुष्य जिसकी ई अर पःपका देष नही लगता है। आवरहामकी भन्नी जो उरके लिये धर्म करके गिणा गया या यह केवल उसके वासी नही लिखा गया पर हमारे वास्तेभी और हमारी भन्ती हमारे हकमें धर्मकरके गिला जायगा जा हम उसपर बिश्वास करे जिसने हमारे प्रश्नु विश्वको मुश्रों से उठाया जी हमारे दोवांके कारण शापा गया था चीर हमारे निर्देशि होनेके कारण फेर जिलाया गया था॥ दूस लिये कि जब इस सामर्थहीन घे उसी समयने सीष्ट अधमीयों ने निये मूत्रा और इसी ई यरने हमारी स्रोड चपना प्रेम प्रकाश कि हम दुश्मन होते क्रए खीष्ट हमारे वासे मूत्रा ती उसके बक्करे निर्देशि किये ज्ञये हो को हम ज्ञों न उसके विस्तिसे मुक्त पावेंगे को कि जी हम दुशमन होते ज्ञए ईश्वरके पुत्रके मरणके कारण

से उही मिलाय गय ती मिलाप गयपर हम उसके जीवन से केता ज्यादा मुक्त पावेंगे सिवाय इसके हम अपने प्रभ यिश् सीष्टके प्रायस्थित्वके वसीलेसे ईश्वरमें श्वानन्दभी कर ते हैं ॥ क्वांकि जैसा एकके पाप कर एसे मरण जगतमें समाया और सभींपर चल गया क्योंकि सभींने पाप किया वैसाही एकको धर्मको गुगसे जीवनक्रम निर्देशि होनेकी छापा सभोपर ऊई॥ इस लिये कि जैसा एक मनुख्यके त्राज्ञा लंघनसे बज्जतरे पापी किये गय वेशे ही एकके आज्ञा मान्नेसे वज्जतेरे धन्ती किय जांगे॥ कि जैसे पापने मरण तक राज्य किया है वैसे क्षपा धर्मको राहसे हमारे प्रभु यिश खीष्टके वहीलेसे अनन्त जीवनतक राज्य करे॥ कोंकि पापका फल मरण है परंतु ई अरकी दान अनन जीवन है हमारे प्रभु यिशु खीष्टके वसीलेसे॥ हाय दुःखी मनुष्य जी में ज कीन मुक्ते इस मरणकी देहसे उद्घार करेगा अकुर ईश्वरका हुनारे प्रभु विश्व कीष्ट करेगा॥ जिसने हमसे अपने वेटेकी रोक नहीं रखा पर हम सभों के वास्ते उमे सैंग दिया कि बिखदान होने वह उसके साथ इनकी कैसे सब कुक्भी यों हो न देगा। भक्तीसे जो धर्म प्राप्त है वह यों कहता है कि अपने जीव में मत कह कि खर्गमें कोन चढ जायगा अर्थात सीष्टकी उतारने अथवा गहरेमें कीन उतरेगा अर्थात खीएकी मरणसे फोर उठा लाने॥ पर बात यह है कि जो तू अपने मुंहसे प्रभु विश्वको कबूलेगा चोर अपने जीवसे बिआस करेगा कि ईश्वरने उसको सूत्रोंसे उठाया है तू मुक्त पानेगा॥ क्योंकि धर्क्षयंथ कहता है कि जो कोई

उसपर विश्वास करेगा अन्मिन्दा नही होदेगा को कि देश देशको लोगों में कुछ फरक नहीं वह एक ही प्रभु सभी षर जो उसकी प्रार्थना करते हैं दया रूपसे धनी है और जो कोई प्रभुको नानकी प्रार्थना करेगा सुन्न पानेगा॥ चैर इसी लिये जी ह मूचा चौर जीभी उठा कि वह मुदीं चौर जिंदें का प्रभु होवे चौर सब्बे देशीको चौर हम सब कों भी उसके विचारके त्रासनके त्रागे खडे होने पडेंगे क्योंकि लिखा है कि प्रभु कहता है यथा मैं जीवुं हरेकके घुटने मेरे आगे टेके जांगे और हरेककी जीभ ईश्वरकी कब्लेगी॥ जा मङ्गल समाचारका विषय गुप्त है ता उन्हरें हैं जिन्हकी नाम होना है जो सीष्ट मरणको भन्नी नही करते हैं जिन्हके मनका शैवानने अधेरा कर रखा है जैसान हो ईश्वरका साइक्य जो सीष्ट है उसके तेजी मय मङ्गल समाचारकी ज्योति उन्हमें प्रकाश होवे॥ म दुल समाचार ई अरसे मिलानेकी सेवा है अर्थात ई अर जी है वह खी हमें होके जगत लोगके पाप उन्हपर नही धरके जगतको अपने साथ मिला रहाथा और ईश्वरने ह्य सेवा अपने दासें के हाथ सापा है सा अब हम खीष्ट की बोड़रे वकील है बीर ईबर हमारी मारफतसे विन्ती करता है इसलिये हम खीष्टके एवजमें तुन्हारी विन्ती कर तें में तुन्ह ई अरसे शिल जाव इसिलये कि जो धार्मी क पुरुष कुछ पाप नजानता था उसकी ई अरने हमारे लिये पापका प्रायश्चिय उहराया कि हम उसके कारणसे ईश्वर के धर्मी बने ॥ देखा हमारे प्रभु यिशु सीष्टकी कैसी क ३

लपा थी कि जदापि वह धनी था तीभी वह हम पापी योंके चिये कंगाल बना कि हम उसकी अधीनताईके कारणसे धनी होवें॥ ई खर जो क्रपारूप धनसे धनी है उसने अपने बडे प्रेमसे हमें प्रेम किया है और जह मह पापों में मूए पडे थे हमे खी हके साथ जिलाया और उठाया और सगीं सानोंनें उसके साथ बैठाया॥ ह मारी मुक्त छापासे श्रीर भक्ती करनेसे है श्रीर सो भी ऋपने कियेसे नहीं ई अरका प्रसाद है कर्मा करके नुक नहीं है त्रैसान हो कोई ऋहंकार करे। त्रान्य मतके लोग जो सीएसे परे है वे जगतमें निरास और ई खर रहित है पर वे अपने कल्पित मतों श्रीर पापेंसे जैसाही दूर रहें सीष्टमें नित्ती करके वे उसके वक्त के गुणसे निकट लिवाए जाते हैं क्योंकि वह उन्हके मिलापका कारण च्यार बीचवाल है॥ ई खरने हरूको क्रोध भागनेको नही मुकरर किया पर मुक्त पानेकी हमारे प्रभु विश् को छक्ने वसी लेसे जो हमारे लिये मूत्रा कि खाह हम जांगेंबा सोवें हम उसके साथ जीवें ॥ यह सदी बात है और सभोंसे कवूली जानेके लायक है कि सीष्ट यिश पापीयोंकी बचानेकी जगतमें याया हां अधमसे अधम पापीयांका॥ इमारे उस ईश्वर तारककी यह मरजी है कि सब लोग मृत द्यान पावें त्रीर मुत्तको पक्त वे क्योंकि एक ई खुर चौर ई खर चौर मनुखों के दरमियान एक बीच वाला है वही देहधारी प्रभु विशु खोष्ट जिसने सभें के निस्तारके वास्ते आपेको दिया है और सो पूरे समयमें प्रविच होगा॥ हमारे तारक यिशु खी हने मरणको मेट

दिया है और जीवन और असल्यन की प्रगट किया है मङ्गल समाचारके वसीलेसे ॥ उसने आपेको हमारे वासे दे दिया तालि हमकी सब पापसे निस्तारे और त्रपने लिये एक खास खागका पविच करे॥ इस आपभी कुछ काल अज्ञान भलाए ज्ञए रंग रंगकी कामना चीर चैशोंके वस्तें वैर चीर डाहमें दिन काटतेचाप चिन्नाए इए बीरोंको घिन्नाते थे पर जब हमारे मुक्त करणहारे ई घरकी से हरवानी चौर प्रीत मनुष्योंकी चीड दिखाई दीई तब उसने हमारे धर्म क्सींसे नहीं पर अपनी क्पा नुसार नय जनाकी धुलाईसे त्रीर धक्षीत्याके नय करनेसे हमको हमारे चाता विशु खीष्टकी वसी खेसे बज्जरूप मुक्त किया जिस्रो हम छपानुसार निर्दीषी किये जए होको यनन जीवनकी सामने सधिकारी इए हैं। ईसर जी नाना समयमें और नाना प्रकारसे अगलोंसे आचार्थी कीमारफत कहा किया वह दुन्ह पिछले दिनों में अपने पुत्र की मारफत इमसे बोला हैं जिसकी उसने सब कुछका अधिकारी किया है जिस्ते उसने जगतकोभी रचा है। वह् उसके तेजका प्रकाश चीर उसके रूपका साहभ्य है त्रीर अपने पराक्रमी वाकासे सब कुछको संभालता है जब वह त्राप हमारे पापको निवत कर चुका ऐ वर्धके दहिने अंचेपर बैठ गया॥ जिल्हको वह निस्तारने त्राया वे जो मांस चक्रकी देहमें घे इसी उसनेभी देह धारण किया ताकि वह मरके मरणके प्रतिवासके। याने शैमानकी साम बारे और जो जो नरणके डरसे इपनी सारी जिन्हिंगी गिरिफतारीमें घे उ इकी उद्वार करे॥ मङ्गल समाचारके

भारतें ई यर अपने लोगोंसे यह संबंध करता है ई अर कहता है में उन्हके मनमें अपनी आज्ञायोंकी रख को हुता श्रीर उन्ह के अन्तरों में बन्हें लिखुड़ा श्रीर मैं उन्ह का ईश्वर होतुङ्गा चौर वे मेरे लोग होवंगे॥ चौर वे चपने पड़ी होतो है। इचपने आईको नहीं कहा करेंगे ईमरकी जान क्यों कि सब मुक्ते जानेगे छोटेसे बडेतक॥ क्यों कि में उन्हकी अधन्तियोंपर दया करुङ्गा और उन्हके पाप श्रीर खोंटाई में श्रीर याद नहीं कर्ज़ा॥ हमारे प्रधान पुरोहित जीष्ट अपने लझ ने धर्म खानमें समाया है और अपने जजनानोंके लिये अनना माच प्राप्तिया है कोंकि जी पश्यों के लड़ और राखके छिडकनेसे अपिव ने लोग देहसे पवित्र हो जांय ती खीरने जी परमालाके वसीले से आपेको ई अरके आगे बिना देख चढाया उसका लज्ज केता गुण ज्यादा तुम्हारे मनको जीवना ई श्वरकी सेवा करनेकी नुई कामोंसे साफ करेगा॥ जैसा मन्छोंके लिये एक बेरी मरणा ठहरा है और उसपीके बिचार वैसे खोएभी एक बेरी चढाया गया बक्त तोंके पाप जठानेके लिये और जो जो उसकी बाट देखते हैं उन्हकी वह दूसरी वेरी पाप रहित मोचको पर्जचानेको आवेगा॥ तुः ह जानते हैं। कि तुन्ह बिनाशी चीजोंसे जैसी चान्ही चीर सोना चाजाद नही किय गय लेकिन सीष्टके च नील लड़से जैसे निर्देश और बेदाग मेश बहेने जी जगतकीनीव डालनेसे पहिले तो उद्दराया गया था पर इस अलाको समयमें प्रकाश ज्ञा श्रीर उसने श्राप श्रपने दे इमें क्रूग्रपर इमारे पापोंको धारण किया ताकि इम

पापांकी त्रांडसे मरके धर्ममें दिन कारें॥ उसकी मार से हमको सलामती ऊई है कोंकि सीष्ट धस्त्री होके पा पांकी निमित्त अधमांकी लिये एक बरी मरा ताकि वह हमको ई खरके पास पहुंचावे॥ ई खरका पुत्र यिश् खीएका लझ इनकी सब पापसे पविच करता है जी इन कहें हसें पाप नहीं हम अम करतें हैं और सव हथें नही है जै। हम अपने पापोंकी कब्लें यह हमारे पापों को जमा करनेको और इमें सब अधक्तीसे पविच करने को सचा और यथार्थ हैं॥ जी कोई पाप करे ईश्वर पिताको पाच हमारेयक वकोल है वही यिशु लीष्ट यथार्थी बीर वह हमारे पापेका प्रायस्ति है कीर बेदन ह मारे नही पर सारे जगतकभी॥ यही प्रेन है न कि इसने ई अरको पेल किया परंतु उसने इसको पेस किया श्रीर अपने पुत्रको हम रे पाषांका प्रायस्थि होनेकी भेजा ॥ ई खरने हमकी अनन जीवन दिया है और वह जीवन उसके पुत्रमें है जिसने पुत्रको धारण विया है उसको जीवन है और जिसने पुत्रको नही धारण किया उसको जीवन नहीं हैं॥ यह बाते तुन्हें चिखी जाती हैं ताकि तुन्ह जाना तुन्हे अनना जीवन मिलना है औ।र ताकि तुन्ह ई खरके पुत्रके नामके भन्नी करो। प्रभु थिशु जी दयाल आप अपने इन्ह वचने के साथ अपने आशी र्वार दी जिये कि पढने मुनेवालांको तुन्हारी ई अर ताकी त्रीर मुक्त दायक मङ्गल समाचारकी प्रतीत होवे श्रीर कि वेतुन्हारी प्रार्थना नित्य नित्य करके पापाका मोचन त्रीर गुड़ हृद्य पावें त्रीर तुन्हारी भक्ती त्रीर डर त्रीर

मनसे दिन काटकर पूर्ण नीचको पक्तचे श्रीर तुन्हारी परम लपासे देशर म बिदानन्दके साचातकार होके नित्य श्रानन्दनं रहें श्रामिन ॥

॥ प्रभु विभुका गुवानबाइ ॥

१ प्रभु यिशु द्याल है। उसके श्रेसा कोई न है। वही अपनी द्यासे। मेरी जानको बचावे॥ २। प्रभु यिशु प्रेमी है। उसके प्रेमका सम न है। उसने प्रेमसे ह्यागा द्वर्ग उसने दुःखसे भोगा अपवर्ग॥ ३। प्रभु यिशु ज्ञानी है। हमे चीका किया है। उसने पाप श्रीर पृष्यका ज्ञान। श्राव्यासेती कीया दान॥ ४। प्रभु यिशु बल वान है। श्रेतानको हराया है। अब हम पाप श्रीर नरकसे। बचें उसके प्रभावसे॥ ५। प्रभु यिशु स्वाहे। अपना करार रखता है। उसने जो कुछ क्र ब्रुला। होगा वेश क्र सव पूरा॥ ६। प्रभु यिशु ईश्वर है। करतार पालक तारक है। उसकी तारीफ दिलसे हम। गाते रहेंगे दम बदम ॥

९ कीषा हाल है दुनियाका। क्यातवक्ता आदमीका। डरे कीन है खुदासे॥ नफरत रखे गुनाहसे॥ २। इण् सबके सब गुमराइ। गुनाइसे इण् तबाइ। दिया होड खुदाके तें। समेट जिया पापके तें। ३। चाई कीन खुदाकी बात। सुने कीन निजातकी बात। सोष्टके खारोकी माने कीन। सीष्ट्रपर विश्वास करे कीन॥ ४। देखी खुदा श्राइमीकी। देखी श्रापकी खिलबतकी। देखी कि वह तबाइ है। पापके सबब जानती है॥ ५। शुकुर श्रापके विया जाय। पापीपर श्राप रहीम है। श्रुकुर श्रापके विया जाय। पापीपर श्राप रहीम है। की श्रावात पाप॥ ६। फीलाव मङ्गा है। जिससे पापी निजात पाए॥ ६। फीलाव मङ्गल समाचार। सीष्टकी मीतका समाचार। जिस्से पापका मोचन है। दिलभी पाकसाफ होता है॥ ७। फीलाव दूस श्रुकोल बातकी। सुनाव हरेक श्रादमाकी। ताकि वे निजात पावे। श्रापका शुकुर सजीवें॥

९ इस देशके जपर दयाल हो। श्री ईश्वर यिशु खिए। सत्य मत तुन्हारा फैला देव। सब मनुष्योंका दृष्ट ॥ २ । इस देशके सब जात पापी हैं। क्या हिंदु क्या गैर दीन। न मजहव को इभी दुरुल है। जल्द फौजाव श्रापका दीन॥ ३ । श्री प्रभु यिशु रहीम हो। सब पापीकी बचाव। सब लोगकी श्राप धर्माला देव। श्रीर प्रेमसे दिल किराव॥

१ त्राव खीष्टकी सुित गाव। जो इमारे तारक हैं। यिक्क परमेश्वर जिल्लो नाम। जी करतारपालक है॥ २ । समुद्दर शूजिसने। त्रापही रच रखा

[99]

है। त्रीर चारों खूंठोकोभी जिसने। निज बलसे रचा है। ३। उसीके सन्मुख आव। हाथ जोड़ के सिर मुकाव। उसीके किया हम सब है। हम अपने कोइभी नहीं। ४। आज सुना खीष्टकी बात। आव खीष्टकी अधीन होव। त्री दुन्दस्थानके सकल जात। आव खीष्टकी अरण लेव। ५। पै उसके प्रेमकी बात। जीं माना नहीं तुन्ह सब। ते। नरक आगमें दुष्टके साथ। नित्य जलेंगे तुन्ह सब। ६। खीष्ट को धसे कहेगा। दुष्ट खर्मके सुखसे दूर। जिस सुखको तुन्हने तुन्छ किया। न भोगोगे अब दूर॥